तुरंत जारी करने हेतु

प्रेस रिलीज

सर्वाइकल कैंसर का खतरा हर महिला को

सर्वाइकल (गर्भाशय) कैंसर का बचाव और उपचार दोनों उपलब्ध। पहला ऐसा कैंसर जिसके निर्लमून का डब्लूएचओ ने लक्ष्य घोषित किया

नई दिल्ली, 17 नवंबर, 2020: विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्लूएचओ) की ओर से आज (17 नवंबर को) पहली बार किसी तरह के कैंसर के निर्मूलन की पहल करते हुए सर्वाइकल कैंसर के निर्मूलन का लक्ष्य घोषित किया गया है। ह्यूमन पैपीलोमा वायरस (एचपीवी) संक्रमण से होने वाला यह कैंसर भारत में महिलाओं में दूसरा सर्वाधिक होने वाला कैंसर है। इससे बचाव संभव है, इसके बावजूद भारत में हर साल औसतन 96,922 महिलाओं में इसकी पुष्टि होती है और इनमें से 60% इस बीमारी की वजह से मारी जाती हैं।

सर्वाइकल कैंसर पर डब्लूएचओ के सहयोगी कार्यक्रम के तौर पर आयोजित वेबिनार में मंगलवार को वैश्विक और भारतीय विशेषज्ञ एकत्रित हुए। इसमें सर्वाइकल कैंसर से निपटने की नई वैश्विक रणनीति के संदर्भ में विभिन्न पहलुओं और इसके भारतीय संदर्भ पर चर्चा की गई। यह वेबिनार हार्वर्ड टी.एच. चैन स्कूल ऑफ पब्लिक हेल्थ-इंडिया रिसर्च सेंटर, प्रोजेक्ट संचार, अमेरिकन कैंसर सोसाइटी और कैंसर फाउंडेशन ऑफ इंडिया ने आयोजित किया। इसका संचालन डॉ. रती गोदरेज (एमडी- इंटर्नल मेडिसिन) ने किया। ये हार्वर्ड स्कूल ऑफ पब्लिक हेल्थ- इंडिया रिसर्च सेंटर में एडवाइजर हैं।

हर महिला को सर्वाइकल कैंसर का खतरा

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स), नई दिल्ली में प्रसूति और स्त्रीरोग विभाग की यूनिट हेड और डब्लूएचओ महा निदेशक की सर्वाइकल कैंसर निर्मूलन पर तकनीकी सलाहकार समूह की सदस्य डॉ. नीरज बाटला ने कहा कि हर महिला सर्वाइकल कैंसर के खतरे की जद में है। लगभग 80% महिलाएं जीवन काल में किसी न किसी समय इससे प्रभावित होती हैं। उन्होंने कहा कि यह अनुवांशिक बीमारी नहीं है। ज्यादा संख्या में गर्भधारण करने वाली महिलाओं, कम उम्र में यौन संबंध शुरू करने वाली लड़कियों, कई लोगों से यौन संबंध बनाने वाली महिलाओं और सूजन पैदा करने वाले दूसरे तरह के संक्रमण से प्रभावित होने पर इसका खतरा ज्यादा होता है।

इंटरनेशनल एजेंसी फॉर रिसर्च ऑन कैंसर (डब्लूएचओ) के सीनियर विजिटिंग साइंटिस्ट डॉ. रंगास्वामी शंकरनारायणन ने कहा कि इसके लिए एचपीवी टेस्ट सबसे अधिक सटीक और सस्ती जांच मानी गई है।

कैंसर फाउंडेशन ऑफ इंडिया के संस्थापक अध्यक्ष, प्रोफेसर मकसूद सिद्दीकी ने कहा कि सर्वाइकल कैंसर का बचाव और इलाज दोनों संभव होने के बावजूद इसके बारे में जानकारी और जागरुकता के अभाव की वजह से यह इतनी बड़ी समस्या बना हुआ है। उन्होंने कहा कि यह समस्या सिर्फ ग्रामीण इलाकों में ही नहीं शहरी क्षेत्र में भी बनी हुई है।

अगले वर्ष तक आ सकता है भारतीय टीका

डॉ. शंकरनारायणन ने बताया कि सर्वाइकल कैंसर के जिस प्रस्तावित भारतीय टीके पर काम हो रहा है वह बहुत प्रभावी और कम मूल्य का हो सकता है। इसे ले कर बहुत अधिक उम्मीदें हैं और वर्ष 2021 के अंत तक इसके उपलब्ध हो जाने की संभावना है। सुरक्षा मानकों पर भी यह बहुत खरा उतरा है, क्योंकि इसके ट्रायल के दौरान अब तक ना तो किसी की मौत हुई है और ना ही कोई गंभीर दुष्परिणाम दिखा है।

इंडियन एकेडमी ऑफ पिड्रिएटिक्स (आईएपी) के अध्यक्ष डॉ. बकुल पारेख ने कहा कि सर्वाइकल कैंसर के टीके को आईएपी की ओर से अनुमोदित टीकों की सूची में शामिल किया जा चुका है और साथ ही केंद्र सरकार के राष्ट्रीय टीकाकरण कार्यक्रम में भी इसे शामिल करने का अनुरोध किया जा चुका है। उन्होंने कहा कि इस टीके से बहुत सी जान बचाई जा सकती हैं और भारत को इस लिहाज से तेजी से कदम बढ़ाने होंगे।

वेबिनार के दौरान अपने वीडियो संबोधन में डब्लूएचओ की चीफ साइंटिस्ट डॉ. सौम्या स्वामीनाथन ने कहा कि हमारे पास सर्वाइकल कैंसर के निर्मूलन के लिए जरूरी सभी साधन उपलब्ध हैं। जरूरत है तो बस उनका इस्तेमाल करने की। डब्लूएचओ ने इस लिहाज से '90-70-90' की रणनीति बनाई है। इसके तहत लक्ष्य रखा गया है कि वर्ष 2030 तक 90 प्रतिशत बालिकाओं का 15 वर्ष की उम्र से पहले टीकाकरण; 70 प्रतिशत महिलाओं का 35 साल की उम्र से पहले और फिर 45 साल की उम्र पर बेहतर गुणवत्ता वाली जांच; और 90 प्रतिशत प्री-कैंसर या कैंसर वाली महिलाओं का उपयुक्त इलाज और देखभाल सुनिश्चित किया जाए। डब्लूएचओ के मुताबिक अगर '90-70-90' के इस लक्ष्य को अपना लिया जाए तो वर्ष 2050 तक सर्वाइकल कैंसर के मामलों को 70% तक कम किया जा सकता है।

कोविड-19 का प्रभाव

डॉ. शंकरनारायणन ने कहा कि कोविड-19 की वजह से दूसरे लोक स्वास्थ्य कार्यक्रमों की तरह सर्वाइकल कैंसर जांच कार्यक्रम भी प्रभावित हुआ है। इसे तेज करने के लिए अस्पताल और सामुदायिक जांच कार्यक्रम दोनों में सैंपल खुद से लेने को बढ़ावा दिया जा सकता है। वक्ताओं का मानना था कि सर्वाइकल कैंसर टीके को राष्ट्रीय टीकाकरण कार्यक्रम में शामिल किए जाने से बहुत सी जान बचाई जा सकेंगी और इसके निर्लूलन का लक्ष्य भी पूरा किया जा सकेगा। विशेषज्ञों ने इसकी जांच और इलाज के लिए बेहतर ढांचागत सुविधाओं की जरूरत पर भी जोर दिया।

ज्यादा जानकारी के लिए संपर्क करें:

डॉ. अनन्या अवस्थी
असिस्टेंट डायरेक्टर
हार्वर्ड टी.एच. चैन स्कूल ऑफ पब्लिक हेल्थ- इंडिया रिसर्च सेंटर
ईमेल- awasthi@hsph.harvard.edu

डॉ. आस्था कांत
प्रोजेक्ट मैनेजर, प्रोजेक्ट संचार
हार्वर्ड टी.एच. चैन स्कूल ऑफ पब्लिक हेल्थ- इंडिया रिसर्च सेंटर

ईमेल- akant@hsph.harvard.edu

नोट-

17 नवंबर, 2020 को भारतीय समय के अनुसार शाम 7 बजे विश्व स्वास्थ्य संगठन ने सर्वाइकल कैंसर निर्मूलन कार्यक्रम के लिए वैश्विक रणनीति की घोषणा की। वेबिनार के दौरान सर्वाइकल कैंसर से ठीक होने के बाद इसकी जागरुकता के लिए काम कर रही सुश्री संगीता गुप्ता ने इस वैश्विक रणनीति की घोषणा के कार्यक्रम का लिंक साझा किया। यह लिंक यहां दिया जा रहा है-

https://www.who.int/news-room/events/detail/2020/11/17/default-calendar/launch-of-the-global-strategy-to-accelerate-the-elimination-of-cervical-cancer

इस वेबिनार की यूट्यूब वीडियो रिकॉर्डिंग देखें: https://youtu.be/WFOEoIiWOJs